25-08-2020

इथेनॉल में 10 प्रतिशत सम्मिश्रण की आवश्यकता

इथेनॉल के उत्पादन में बाजार आपूर्ति-आर्थिक लाभ दोनों में सामंजस्य स्थापित हो

कानपुर, 24 अगस्त। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की ओर से पांच दिवसीय आनलाइन कार्यक्रम एक्सिक्यूटिव डेवलेपमेंट प्रोग्राम का शुभारंभ करते हुए भारत सरकार, सचिव (खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण) सुधांशु पांडे ने कहाकि चीनी उद्योग में कार्यरत कर्मियों के ज्ञान को समृद्ध करने के उददेश्य से ऐसे आनलाइन कार्यक्रम और ज्यादा से ज्यादा आयोजित किये जाने चाहिये। जिससे एक आर्थिक और पर्यावरणीय रूप से समृद्ध चीनी उद्योग का विकास सुनिश्चित हो सके। वैश्विक शर्करा परिदृश्य के बारे में उन्होंने कहाकि वर्तमान समय में ऐसे चीनी कारखानों का विकास किया जाना चाहिये। जो चीनी के साथ-साथ ईथनोल के उत्पादन में बाजार के मांग की आपूर्ति और आर्थिक लाभ दोनों में सामंजस्य स्थापित हो सके। संयुक्त सचिव सुबोध कुमार सिंह ने कहाकि चीनी कारखानों से पेट्रोल में इथेनाल सम्मिश्रण कार्यक्रम (ईथनोल ब्लेडिंग) को ध्यान रखते हुए इथनोल के उत्पादन को बढ़ाने के लिए गन्ने के रस, सीरप और बी हैवी शीरा जैसे सह उत्पादों के उपयोग को बढ़ावा देने का आह्वान किया जिससे इथेनाल सम्मिश्रण कार्यक्रम के लिए आवश्यक ईथनोल की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके। इथेनाल सम्मिश्रण के अनुसार हमें 10 प्रतिशत ईथनोल सम्मिश्रण करने की आवश्यकता है और हम उसके स्थान पर केवल 5 प्रतिशत ही ईथनोल का सम्मिश्रण कर पा रहे है। वर्तमान में ईथेनोल की मांग होने पर चीनी कारखानों के आर्थिक लाभ के साथ राष्ट्रहित से भी जुड़ा है।

सचिव सुधांशु पाण्डेय, निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन

एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने स्ट्रैटेजिक प्लानिंग एडं आप्टीमिजेशन आफ रिसोर्स विषय पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने कहाकि सरप्लस चीनी उत्पादन और कोविंड-19 के प्रभाव को देखते हुए सभी चीनी उद्योग के कार्यकारी अधिकारियों को पुनरावलोकन, पुनर्नियोजन एवं पुन संयोजन के मंत्र को ध्यान में रखना चाहिये।

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मकान नं0 128/777 ए के

Call for developing flexi sugar factories

PNS ■ KANPUR

'The executives are required to follow the mantra of 'Revisit, Reorient and Recreate' so as work out the best business models in the present COVID-19 scenario'

Secretary, Food and Public Distribution, Sudhanshu Pandey while addressing the inaugural session of the five-day virtual seminar on 'Executive Development Programme' being organised by National Sugar Institute on Monday, stressed the need for converting sugar factories into a hub of bio-energy and other value-added products, including speciality sugars, for becoming atmanirbhar (self reliant).

He also complimented the NSI and underlined the need to conduct more online programmes for enriching the knowledge of working personnel so as to ensure an economically and environmentally sustainable sugar industry. Pandey said in view of the current global sugar scenario, the greater need was for developing flexi sugar factories producing sugar and ethanol as per relative economics and market demand. He also stressed on converting sugar factories into a hub of bio-energy and other value added products, including speciality sugars, for being atmanirbhar.

The secretary said it was worth mentioning that in a short span, the NSI had carved a niche for itself in the field of quality sugar production. He expressed the hope that the institute would continue to play a proactive role for the nation's progress.

Joint Secretary, Sugar & Administration, Government of India, Subodh Kumar Singh, called upon the sugar factories to take up ethanol production by utilising sugarcane juice, syrup and heavy molasses etc. to boost up ethanol availability for ethanol blending programme and balance sugar production-demand scenario.

He said against the ethanol blending target of 10 per cent, the country was still into 5 per cent blending and as ethanol market was assured, its production could help sugar factories in improving their financial conditions.

Singh said that this was in the larger interest of the nation being clean and using green fuel, for attaining energy security and conserving foreign exchange required for import of crude oil.

NSI Director Prof Narendra Mohan, speaking on 'strategic planning & optimisation of resources', suggested that looking to the sugar surplus and impact of COVID-19, the executives were required to follow the mantra of 'Revisit, Reorient and Recreate' so as work out the best business models in the present scenario.

He said safe food from 'Farm to Fork' and production of N-O-N (Natural, Organic and Nutritive) sweeteners should be high on agenda for the sugar industry.

Prof Ross Broadfoot from Queensland University of Technology, Australia, while giving an overview of the technological scenario in various sugar producing countries, emphasised upon adopting various technological advancements for ever-changing business requirements.

He said while diversifications were important to reduce dependency on income from sugar, it was important to benchmark the efficiency parameters and draw SOPs so as to reduce the cost of production. Dr Vinay Sharma from IIT-Roorkee, while speaking on 'collaborative leadership and leadership development', said for higher productivity and conducive business environment it was important for every worker to take up ownership for the job he was assigned with.

He said there was a greater need for skill development, which was essential for developing leadership qualities.

Prof D Swain, convenor, welcomed the chief guest and guest of honour.

About 100 senior executives from Indian and overseas sugar industries participated in the meet.

चीनी संग अन्य मूल्यवर्धक उत्पाद भी मिलों में तैयार करें

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

चीनी मिलों को अब आत्मनिर्भर बनने की आवश्यकता है। इसके लिए चीनी संग इथेनॉल और अन्य मूल्यवर्धक उत्पाद तैयार करने होंगे। इससे लाभ के साथ अलग पहचान मिलेगी। यह बात केंद्र सरकार के सचिव (खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण) सुधांशु पांडेय ने कही।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के पांच दिवसीय ऑनलाइन एग्जिक्यूटिव डेवलपमेंट प्रोग्राम का सोमवार को सुधांशु पांडेय ने उद्घाटन किया। कहा कि मिलों को विशिष्ट शर्करा उत्पादन केंद्र के रूप में खुद को विकसित करना होगा। भारत सरकार के संयुक्त सचिव (चीनी और प्रशासन) सुबोध कुमार सिंह ने कहा कि इथेनॉल ब्लेंडिंग प्रोग्राम का ध्यान रखें। पेट्रोल में दस फीसदी इथेनॉल मिलाने की आवश्यकता है जबकि पूर्ति सिर्फ पांच फीसदी हो रही

एनएसआई के वेबिनार में विशेषज्ञ।

है। इसका उत्पादन चीनी कारखानों के आर्थिक लाभ के साथ राष्ट्रहित में भी है। संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने कहा कि चीनी उद्योग को एन-ओ-एन (नेचुरल-ऑर्गेनिक-न्यूट्रीटिव) पद्धति को अपने एजेंडे में शामिल करना चाहिए। कोरोना संक्रमण काल में यह और अधिक जरूरी हो गया है। पैकेजिंग पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। आस्ट्रेलिया के प्रो. रॉस ब्रॉडफुट ने कहा कि चीनी मिलों में कुछ भी बेकार नहीं होता है, उसका सदुपयोग करने की जरूरत है।

पोषक तत्वों से भरपूर होगी चीनी

जागरण संवाददाता, कानपुर : राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआइ) में सोमवार से शुरू हुए पांच दिवसीय ऑनलाइन एक्जीक्यूटिव डेवलेपमेंट प्रोग्राम में वक्ताओं ने कहा कि चीनी पोषक तत्वों से भरपूर होगी। इसमें प्राकृतिक व कार्बनिक तत्व मौजूद रहेंगे। इसके लिए मंथन किया जा रहा है।

खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण सचिव सुधांशु पांडेय ने शुभारंभ किया। पहले दिन चीनी के बदलते स्वरूप पर चर्चा हुई। चीनी उद्योग की चुनौतियों और उसकी बेहतरी के लिए कई सुझाव आए। चीनी के उत्पादन, अन्य मूल्यवर्धित उत्पादों के साथ ही एथेनॉल तैयार करने पर जोर दिया गया। सुधांशु पांडेय ने कहा कि चीनी मिलों को विशिष्ट शर्करा उत्पादन केंद्र के रूप में विकसित करने की जरूरत है। एथेनॉल का उत्पादन आर्थिक लाभ देगा। शर्करा प्रशासन के संयुक्त सचिव सुबोध कुमार ने कहा कि पेट्रोल में मिलाने के लिए एथेनॉल का पर्याप्त उत्पादन नहीं हो पा रहा है। 10 फीसद सम्मिश्रण की जगह पांच फीसद ही हो रहा है। एनएसआइ निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि कोविड-19 के असर को देखते हुए चीनी उद्योग के कार्यकारी अधिकारियों को सर्वश्रेष्ठ वाणिज्यिक मॉडल विकसित करने पर जोर देने की जरूरत है। देश के साथ ही विदेश के चीनी उद्योग से जुड़े अधिकारी और वैज्ञानिक शामिल हुए।

आस्ट्रेलिया का परिवर्तित वाणिज्यिक मॉडल

आस्ट्रेलिया की क्वीसलैंड यूनिवर्सिटी के प्रो. रॉस ब्रॉडफुट ने बताया कि आस्ट्रेलिया का चीनी उद्योग परिवर्तित वाणिज्यिक मॉडल पर आधारित है। यहां 50 फीसद चीनी और 50 फीसद अन्य उत्पाद बनते हैं। इससे बाजार में उतार चढ़ाव होने पर उद्योग पर असर नहीं पड़ता है। वहीं, भारत में 85 फीसद चीनी और 15 फीसद अन्य उत्पाद तैयार होते हैं। इसलिए चीनी के दामों में उतार चढ़ाव पर प्रभाव पड़ता है।

चीनी के साथ इथेनाल की मांग भी पूरी करें कारखाने

कानपुर। नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) में सोमवार से शुरू हुए पांच दिवसीय अंतरराष्ट्रीय ऑनलाइन प्रोग्राम के पहले दिन चीनी कारखानों में इथेनाल का उत्पादन बढ़ाने पर जोर दिया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ केंद्रीय सचिव खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण प्रणाली सुधांशु पांडेय ने किया। उन्होंने कहा कि वैश्विक परिदृश्य में ऐसे चीनी कारखाने विकसित किए जाने चाहिए जो बाजार में इथेनाल की मांग भी पूरा कर सकें।

केंद्रीय सचिव ने कहा कि चीनी उद्योग को जैव ऊर्जा तथा अन्य मूल्यवर्धित उत्पादों के साथ उन्हें विशिष्ट शर्करा उत्पादन केंद्र के रूप में विकसित किया जाए। संयुक्त सचिव सुबोध कुमार सिंह ने कहा कि गन्ने के रस से तैयार होने वाले सह उत्पादों के उत्पादन पर अधिक ध्यान देना चाहिए। इससे चीनी मिलों को आर्थिक लाभ होगा। एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने कोविड-19 से पैदा स्थिति के मद्देनजर चीनी उद्योग को अपनी कार्ययोजनाओं का नए सिरे से जायजा लेने का सुझाव दिया। कार्यक्रम में विभिन्न देशों के 100 विशेषज्ञों के साथ चीनी उद्योग से जुड़े लोगों ने हिस्सा लिया।

'Convert sugar factories into hub of bio-energy'

TIMES NEWS NETWORK

Kanpur: Five-day executive development programme organised by National Sugar Institute was inaugurated by Secretary, food & public distribution, government of India, Sudhanshu Pandey on Monday. The programme is being attended by about 100 senior executives from Indian and overseas sugar industry.

Pandey, in his address, stressed on conducting more such online programmes and on converting sugar factories into hub of bio-energy including specialty sugars for being 'atmanirbhar'.

Joint secretary (sugar and administration), Subodh Kumar Singh called upon the sugar factories to take up ethanol production to boost ethanol availability for Ethanol Blending Programme and balance sugar production-demand scenario.

Director, NSI, Narendra Mohan, in his lecture 'Strategic Planning and Optimization of Resources', suggested the executives to follow the mantra of 'Revisit, Reorient and Recreate' so as to work out business models in present scenario of Covid pandemic.